संतनि जो दरिस्नु, ड्रिसी नेण ठरी पिया,
बुंधी वाक विलास जा, लुअं लुअं भी परिस्नु,
अविद्या कलिपत न रही, मिटियो सभु अननु,
पाए आतम धनु, सामी सुमहियो सेज ते.

सच्चे संतजनों के दर्शन की महिमा का वर्णन करते हुए सामीजी कहते हैं, ''संतों के दर्शन कर मेरी आँखें ठंडी हो गयीं, प्रसन्न हो गयीं। संतों के मधुर वचन सुनकर मेरी रग-रग प्रसन्न हो गयी। उसके पश्चात् मेरे मन का अज्ञान (अविद्या) भी दूर हो गया। मन के अंदर (छिपे हुए भ्रम, असत्य/मिथ्या विचार आदि भी नष्ट हो गये। संतों के दर्शन द्वारा मुझे आत्मिक धन ही मिल गया और फिर में अलौकिक आनंद प्रदान करने वाली शय्या पर सो गया।''

जो व्यक्ति परमात्मा से एकरूप हो गया है, वह संत है। संतों के जीवन का प्रधान उद्देश्य होता है लोक का, सामान्यजनों का आध्यात्मिक पुनरुज्जीवन करना। संत ईश्वरस्वरूप/ब्रह्मस्वरूप होते हैं अत: वे ब्रह्मज्ञानी ही होते हैं।

'**ब्रह्ममूर्ति संत जगी अवतरे। उद्धराया आले दीन जनी।।**' अर्थात् इस संसार में ब्रह्मस्वरूप संत लोगों का उद्धार करने के लिए अवतीर्ण होते हैं। सच्चे संत अपने आत्मस्वरूप में भी मग्न रहते हैं। संतजन सभी को कल्याण का रास्ता दिखलाते हैं। समदृष्टि वाले संत निर्मोही, निरिच्छ, निर्द्वन्द्व और अभिमान/अहंकार रहित होते हैं। भक्ति मार्ग पर चलने वाले ऐसे अनासक्त, निष्काम पुरुष ही 'संत' कहलाने के अधिकारी होते हैं। समर्थ रामदास स्वामीजी कहते हैं, 'संत आनंद के स्थान और केवल सुख ही सुख होते हैं। संत समाधि के मंदिर होते हैं। संत विवेक के भंडार होते हैं। संत मानो घूमते-फिरते देव ही होते हैं।'' संतों में आत्मज्ञान एवं परोपकार नामक दो गुण होते हैं। संत उदार एवं शांत स्वभाव वाले होते हैं। संत सब का कल्याण चाहने वाले हैं- '**सर्वभूतहिते रत:।**' संतजन गृहस्थी और परमार्थ का, विज्ञान और आत्मज्ञान का योग्य मेल कराने वाले होते हैं। संत मानो सगुण-साकार परमात्मा होते हैं। जिन के दर्शन करने से सामान्यजनों को आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है।

ऐसे सच्चे संतों के दर्शन करने से महाकवि सामी भी धन्य हो जाते हैं। आत्मिक संपत्ति प्राप्त कर अलौकिक आनंद एवं सुख प्राप्त करते हैं।

कबीर शीतल जल नहीं, हिम ना शीतल होय।
कबीर शीतल संतजन, राम सनेही सोय।।

■